Ans. (b) चम्बल नदी बेसिन राजस्थान के कोटा बूंदी, टोंक, सवाई माधोपुर और धौलपुर जिलों के लगभग 50,026 वर्ग किमी. क्षेत्र में विस्तृत है। चम्बल से निर्मित बीहड़ों से प्रभावित क्षेत्र लगभग 4530 वर्ग किमी. है। कोटा से बारा तक 480 किमी. लम्बाई में चम्बल बीहड़ पट्टी विस्तृत है।

1919. भू-जल की उपलब्धता तथा गुणवत्ता की दृष्टि से राजस्थान में सबसे ज्यादा चिन्ताजनक स्थिति किन जिलों की है-

(a) जैसलमेर, बीकानेर (b) पाली, चूरू
(c) बाड़मेर, जालौर (d) नागौर, जयपुर

JEN Mechanical Diploma 21.8.2016

Ans. (d) भू-जल की उपलब्धता तथा गुणवत्ता की दृष्टि से राजस्थान में सबसे ज्यादा चिंताजनक स्थिति नागौर एवं जयपुर जिलों की है। अनियंत्रित एवं अत्यधिक दोहन के कारण राज्य के अनेक क्षेत्र गंभीर रूप से समस्याग्रस्त है। गंगानगर, बांसवाड़ा, कोटा, बूँदी जिलों में नहर अधिगृहीत क्षेत्र में जल स्तर ऊँचा है।

1920. राजस्थान में फ्ल्यूरोसिस-ग्रस्त पट्टी कहाँ स्थित है-

(a) भरतपुर-अलवर
(b) कोटा-बूँदी
(c) बाँसवाड़ा, डूँगरपुर
(d) नागौर-अजमेर

JEN Mechanical Diploma 21.8.2016

Ans. (d) राजस्थान में फ्ल्यूरोसिस ग्रस्त पट्टी नागौर-अजमेर क्षेत्र में है। राजस्थान में आधा दर्जन जिलों के भूजल में आर्सेनिक, लेड, क्रोमियम, कॉपर, मैगनीज, आयरन एवं फ्लूराइड की मात्रा मानक से अधिक होने का अनुमान है।

1921. पश्चिमी राजस्थान में मूल पर्यावरणीय आपदा क्या है-

(a) मृदा अपरदन (b) जलाभाव
(c) मरुस्थलीकरण (d) सूखा व अकाल

JEN Civil Degree Exam Date - 16.10.2016

Ans. (b) पर्यावरणीय आपदा के प्रमुख कारकों में मुख्यतः बाढ़, सूखा, अकाल, मृदा अपरदन व जलाभाव इत्यादि को रखा जाता है। राजस्थान के पश्चिमी भाग में पर्यावरण आपदा का मुख्य कारण 'पानी की कमी' यानि जलाभाव है जिसके कारण लगभग 25 प्रतिशत पर्यावरण नष्ट हो चुका है तथा तेन्दुआ, नील गाय, सूअर जैसे जीवों के जीवन पर संकट आ पड़ा है।

1922. राजस्थान में मरुस्थलीकरण का मूल कारण क्या है-

(a) सूखे की बारम्बरता
(b) मिट्टी आवरण
(c) वनस्पति आवरण क्षय
(d) गहराता भूजल स्तर

JEN Mechanical Degree (Non TSP Area) 21.8.2016

Ans. (a) राजस्थान में मरुस्थलीकरण का मूल कारण सूखे की बारम्बरता है। अन्य कारण- मृदाक्षरण; निर्वनीकरण, औद्योगिक कचरा आदि।

मरूस्थलीकरण–एक ऐसी भौगोलिक घटना जिसमें उपजाऊ क्षेत्र में भी मरूस्थल जैसी विशेषताएँ विकसित होने लगती है। वर्तमान में राजस्थान के 4 जिले मरूस्थलीकरण की प्रक्रिया से गुजर रहे हैं। विश्व मरूस्थलीकरण और सूखा रोकथाम दिवस ''17 जून'' को मनाया जाता है।

1923. जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण का अध्यक्ष कौन होता है?

(a) आयुक्त नगर निगम
(b) सी.ई.ओ. (जिला परिषद)
(c) जिला कलेक्टर
(d) पुलिस अधीक्षक

VDO-2021 Exam Date 27.12.2021 Shift-II

Ans. (c) जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (DDMA) का अध्यक्ष जिले का कलेक्टर या जिला मजिस्ट्रेट या उपायुक्त होते हैं। उपर्युक्त विकल्प के अनुसार सही विकल्प C होगा। जबकि राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के मामले में देश का प्रधानमंत्री अध्यक्ष होता है।

1924. गत तीन दशकों में राजस्थान में 90 प्रतिशत से अधिक गाँव किस कृषिगत वर्ष में अप्रत्याशित अकाल एवं सूखे पीड़ित हुए-

(a) 2002-03 (b) 2009-10
(c) 1987-88 (d) 2000-01

Gram Sevek & Hostel Superintendent Ex. Dt. 18.12.2016

Ans. (a) वर्ष 2002–03 में राज्य को सदी के सबसे भीषण सूखे का सामना करना पड़ा। इसका प्रमुख कारण राज्य में कुल वर्षा की कमी –57.5% रही तथा वर्षा का विचलन बीकानेर जिले में –90.1% से झालावाड़ जिले में –32.0% तक रही।

1925.राजस्थान में बहुधा सूखा एवं अकाल पड़ने का आधारभूत कारण है–

(a) अरावली का दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर प्रसार
(b) अनियमित, अपर्याप्त एवं अनिश्चित वर्षा
(c) मिट्टी एवं वनों का अवक्रमण
(d) विवेकहीन एवं अवैधानिक ढंग से पानी का उपयोग

उत्तर - (a)

RPSC RAS/RTS 1944-95

व्याख्या–राजस्थान में बहुधा सूखा एवं अकाल पड़ने के दो आधारभूत कारण हैं (i) राजस्थान में अरावली पहाड़ियाँ पवनों की दिशा के समानान्तर स्थित होने के कारण मानसूनों को रोक नहीं पाती, अतः वर्षाहीन रहती है। (ii) पाकिस्तान से आने वाली गर्म एवं शुष्क हवाएँ न केवल अरब सागर से मानसूनी पवनों को ऊपर उठने से रोकती हैं, बल्कि नमी को भी कम कर देती हैं। इनसे इन हवाओं की वर्षा करने की शक्ति और भी कम हो जाती है।

1926.इजरायल की सहायता से राजस्थान के शुष्क प्रदेशों में जिस फसल को बोया जायेगा वह है–

(a) सूर्यमुखी (b) सोयाबीन (c) बाजरा (d) होहोबा

उत्तर - (d)

RPSC RAS/RTS 1996

व्याख्या–होहोबा का पौधा एक दीर्घायु (40-200 वर्ष) हमेशा हरा-भरा रहने वाला, पथरीला और कंकरीली भूमि में प्राकृतिक रूप से उगने वाला विदेशी पौधा है, जो मैक्सिको, कैलिफोर्निया तथा एरीजोना के रेगिस्तान में पाया जाता है। मूंगफली की भाँति इसके बीजों से भी 45-55% तेल प्राप्त होता है। इस फसल की खेती को विकसित करने में इजराइली वैज्ञानिकों की सहायता से दो कृषि फार्म – एक तो फतेहपुर (सीकर) में 70 हेक्टेयर क्षेत्र में तथा दूसरा खण्ड (जयपुर) में 5.45 हेक्टेयर क्षेत्र में चलाये गये हैं।